संदर्भ के सभी अंक पठनीय और ज्ञानवर्धक हैं। इसकी महत्ता को केवल महसूस किया जा सकता है। आपसे एक निवेदन है कि इसमें एक कहानी अवश्य रखिए। उदाहरणार्थ पिछले अंक में कहानी 'घर' उत्कृष्ट रही। पत्रिका को घर के सभी सदस्य बहुत ही आनंद के साथ पढ़ते हैं। लेकिन पत्रिका प्राप्त देर से होती है।

एक और बात कि विज्ञान संबंधी जो भी लेख आप देते हैं वो रुचिकर तो होते हैं लेकिन कई बार हिंदी क्लिष्ट होने की वजह से रुकावट आती है। आपसे गुज़ारिश है कि इन लेखों को छापते समय इनके हिंदी शब्दों की अंग्रेज़ी भी कोष्ठक में देने की कृपा करें, ताकि लेख का पूरा आनंद और लाभ उठाया जा सके। पत्रिका की पेज संख्या बढ़ाई जाए तो और भी अच्छा रहेगा।

रमेश शर्मा
केशवपुरम, दिल्ली

मैं संदर्भ का नियमित पाठक हूं। मैं कक्षा 12 का विद्यार्थी हूं और अच्छी विज्ञान पत्रिकाएं पढ़ना चाहता हूं। संदर्भ में प्रकाशित लेख स्तरीय होते हैं।

संदर्भ में स्तर के लेख प्रकाशित करने के आपकी टीम के प्रयासों की मैं प्रशंसा करता हूं। समझने के लिहाज़ से ये काफी सरल ढंग से पेश किए जाते हैं। साथ ही खुद कुछ खोजने के प्रति पाठक की जिज्ञासा को बढ़ाने में कामयाब रहते हैं। इसी तरह बच्चों द्वारा उठाए गए रोज़मर्रा के सवालों के जवाब देने के प्रयास भी मुझे काफी अच्छे लगे। मेरी एक सलाह है — उन सभी के लिए जो संदर्भ के लिए लिखते हैं और संपादित करते हैं। कृपया वैज्ञानिक शब्दावली के साथ में उनके अंग्रेज़ी शब्द भी दिया करें। इससे ऐसे लोगों को काफी मदद मिलेगी जिन्होंने इन शब्दों को कभी हिंदी में नहीं पढ़ा है।

मैं समझता हूं कि हिंदी में ऐसे स्तरीय लेखों की कितनी कमी है और जो शायद संदर्भ के देरी से प्रकाशित होने का एक कारण भी है।

अभिनव अग्रवाल
नई दिल्ली

संदर्भ का नया अंक पढ़ा। नीरज जैन द्वारा लिखित 'सिकाडा का मधुर संगीत' बहुत अच्छा लगा। 'चंद्रमा - 1' नाम पढ़कर ही समझ में आ गया कि यह लेख किश्तों में आएगा। संदर्भ में लेखों की शुरुआत अक्सर काफी रोचक ढंग से होती है और पाठक को पूरा लेख पढ़ने की

दिशा में खींच लेती है। 'चंद्रमा' भी इस कोशिश मे कामयाब रहा। चंद्रमा को अपने परिवार का सदस्य मानकर इसके बारे में और जानने की उत्सुकता के साथ पन्ना पलटा तो प्रश्नों के जाल में उलझ कर रह गई। लगा उसके बाद लेख सतत् रहेगा पर. . . ऐसा लगा भग्नों केले का छिलका उतारा, मन बनाया कि केला खाना है और किसी ने रोक दिया कि बस इस बार छिलका उतारो केला अगले सीज़न में खाना।

मुकेश मालवीय का 'बहुस्तरीय शिक्षण, स्थितियों से. . . ' भी पढ़ा। परंतु क्या इस ढांचे 'कक्षाएं पांच और शिक्षक एक' को बदलने का कोई तरीका नहीं है, या इस तरह के लेख इस व्यवस्था में बदलाव की दिशा में एक प्रयास हैं?

छाया दुबे
भोपाल

संयुक्तांक मिला। यह अंक बहुत सुंदर है। नीरज जैन का लेख 'सिकाडा का मधुर संगीत' बहुत रोचक था। इससे हमें एक नए जीव के बारे में जानकारी मिली। वेलणकरजी का लेख 'आवेश चुबंक और कूलंब का बल' भी बहुत अच्छा लगा। 'हिरोशिमा से पोखरण' में *तासुहिको ताकेता एवं सदाको* के बारे मे पढ़कर दुख हुआ। सचमुच अब परमाण्विक शस्त्रों के विस्तार को रोका जाना चाहिए। 'मॉनसून एक अबूझ पहेली', 'तारों का वर्णक्रम और मेघनाथ साहा' तथा 'समुद्र सतह मे उतार चढ़ाव' जैसे विज्ञान से संबंधित लेख बहुत सुंदर और जानकारी पूर्ण थे। हर अंक में वैज्ञानिकों के बारे में जानकारी पाकर हमें कई नई बातों का ज्ञान हो जाता है। इसी प्रकार अलग-अलग वैज्ञानिकों और उनके द्वारा किए गए कार्यों को हर अंक में प्रकाशित करें।

विनोद कुमार सोनी, कक्षा नवमीं
गढ़ाकोटा, सागर, म. प्र.

संदर्भ का संयुक्तांक मिला। मुकेश मालवीय की रचना 'बहुस्तरीय शिक्षण : स्थितियों से उपजा एक प्रयोग', एक रोचक लेख है। मुझे शैक्षिक संदर्भ की कुछ रचनाएं जटिल प्रतीत होती हैं। उनका प्रस्तुतिकरण, भाषा शैली क्लिष्ट होने के कारण सामान्य पाठक को वे जटिल प्रतीत होती हैं।

हालांकि मुझे संदर्भ अतिप्रिय है और बड़ी बेसब्री से इसका इंतज़ार करता हूं। तथा मेरी ख्वाहिश है कि विज्ञान की नई महत्वपूर्ण खोज व

इससे संबंधित समसामयिक भी प्रकाशित हों तो पत्रिका अधिक पठनीय होगी।

अभय प्रताप सिंह
प्रोफेसर कॉलोनी, भोपाल

शैक्षिक संदर्भ मेरी सबसे प्रिय पत्रिका है। परन्तु इसका दो माह का लंबा प्रकाशन काल खलता है। कृपया इसे मासिक बनाने का प्रयत्न करें। अंक 22-23 में दी गई सिकाडा के जीवन की रोचक जानकारी अच्छी लगी। 'हिरोशिमा से पोखरण तक' लेख दिल को छू गया। परमाणु अस्त्र की विनाशकारी गाथा को सुन दिल दहल गया कि कहीं यही कहानी भारत व पाकिस्तान द्वारा दोहराई तो नहीं जाएगी, आशा करता हूं नहीं।

आशिष पेटारे
इंदौर

संदर्भ में शिक्षा का सैद्धांतिक पक्ष ही अधिक विवेचित होता है। इसमें कहीं-कहीं ऐसी कविता या कहानी भी दी जा सकती है जो कहीं शिक्षा के सिद्धांतों से जुड़ती हो। तथा कहानी या कविता को शिक्षा के क्रम में बच्चों के सामने कैसे प्रस्तुत किया जाए इस पर भी विचारपूर्ण आलेख या शैक्षिक अनुभवों पर आधारित लेख भी आना चाहिए। बाल नाटकों पर भी ऐसी सामग्री दी जा सकती है।

श्रीप्रसाद
वाराणसी, उ. प्र.

सदर्भ नियमित रूप से मिल रही है। इससे शिक्षा से जुड़े नए एवं रोचक अनुभव तो सीखने को मिलते ही हैं साथ-साथ कुछ स्वयं करके देखने की भावना भी प्रबल होती है। अंक 22-23 में आर्यभट के बारे में विस्तृत जानकारी गुणाकर मुळे द्वारा उनको एक सच्ची श्रद्धांजलि है। इसी तरह 'बच्चे कैसे सीखते हैं', 'चंद्रमा-1', 'जादुई तालाब की पहेली' भी अच्छे लगे।

बाल किशन (अध्यापक)
हरियाणा विज्ञान मंच, भिवानी

संदर्भ के 22-23वें अंक में माधव केलकर का लेख 'समुद्र सतह में उतार चढ़ाव' पढ़ा। वैज्ञानिक तथ्यों से परिपूर्ण यह लेख अति सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक है। सूक्ष्म जीव विशेषकर *फोरामिनीफेरा* पुरा-इकोलॉजी को दर्शाने में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। *फोरामिनीफेरा* का वितरण जलवायु, तापमान तथा समुद्र की गहराई पर निर्भर करता है। लेखक ने सटीक

उदाहरण देकर हिमयुग तथा तापमान बढ़ने पर समुद्र सतह के उतार-चढ़ाव को दर्शाया है।

एक और जानकारी – अंटार्कटिका हिम चादर के नीचे ज्वालामुखी विस्फोट शुरू होने की जानकारी सन् 1993 में मिली। यूनेस्को के सहयोग से प्रकाशित एक पत्रिका के मार्च 1998 में दिए गए अनुमान के अनुसार यदि 9000 फीट मोटी पश्चिम अंटार्कटिक हिम चादर समुद्र में सरक जाएगी तो पृथ्वी के हर भाग में समुद्र की सतह 65 फीट बढ़ जाएगी। किन्तु अन्य वैज्ञानिकों के अनुसार इन हिम चादरों के नीचे ज्वालामुखी विस्फोटों से अभी तक कोई विशेष नुकसान नहीं हुआ है। फिलहाल समुद्र की सतह में चढ़ाव की संभावना नहीं है।

डॉ. विजय खन्ना, भूविज्ञान विभाग
शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर

संदर्भ का संयुक्तांक मिला। इस बार की संदर्भ ने तो तृप्त कर दिया। उम्मीद करती हूं कि ये हमें जल्द ही समय पर मिलेगी।

कवर पृष्ठ बहुत ही आकर्षक लगा। इसे देखकर लेख पढ़ने की चाहत जागी, पढ़ने पर लगा कि काश मैं भी सिकाडा व उसके मधुर संगीत को प्रत्यक्ष देख और सुन पाती।

हिरोशिमा की आपबीती 'तासुहिको ताकेता' की जुबानी पढ़ते-पढ़ते रोंगटे खड़े हो गए। ऐसा महसूस हुआ कि मैं भी चारों तरफ हो रहे विस्फोटों के बीच खड़ी हूं। सच में इस तरह की घटनाएं मानवता को दहला देने वाली होती हैं। संदर्भ में कहानी जैसे रोचक स्तंभ को स्थायी बनाया जाना चाहिए। 'घर पर' दिल को छू गई। पढ़ते-पढ़ते आदतन नशा करने वाले पिता के मन की उथल पुथल को महसूस किया।

समुद्री घोड़े का चित्र देखकर इसके वास्तविक रुप का अंदाज़ा लगा। वरना अब तक रेखाचित्रों से बड़ी उलझन वाली स्थिति बनती थी।

इस बार शिक्षा से संबंधित लेख अधिक मिले जो कि रुचिप्रद थे।

'बच्चे कैसे सीखते हैं' को पढ़कर पूरी पुस्तक पढ़ने का मन बना लिया।

चेतना खरे
उज्जैन

नया अंक मिला। आकर्षक पृष्ठ सज्जा, उपयुक्त आकार, विज्ञान का अन्तर्जगत एवं प्रकृति की अबूझ रहस्यता को सरल, हृदयगम, रोचक शैली में प्रस्तुत कर सकने की क्षमता के लिए हार्दिक बधाई। शिक्षण कार्य,

अनुभवों को अभिव्यक्ति का पृष्ठ मिले इससे अच्छा क्या हो सकता है।

गोपाल सिंह चौहान
नीमच सिटी, नीमच, म.प्र.

22-23 वां अंक मिला। मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक लगा। 'सिकाडा का मधुर संगीत' पढ़कर अच्छा लगा। नई जानकारी मिली। आपकी पत्रिका के लेख अत्यंत उच्च स्तरीय भी होते हैं एवं कुछ एकदम सरल भी, परंतु एक 9 वीं कक्षा के विद्यार्थी के लिए ज़रा मुश्किल होती है। दो-चार अंकों में ही सही एकाध सरल लेख छाप दिया करें।

'हिरोशिमा से पोखरण तक' अत्यंत अच्छा लगा। परंतु सबसे अच्छी लगी कहानी 'घर पर'। अंत की पंक्ति का कहानी से संबंध अभी तक समझ में नहीं आया। कोशिश जारी है। आशा है कि 'संदर्भ' के अगले अंक जल्दी मिलेंगे तथा जल्दी ही संदर्भ 'मासिक' भी हो जाएगी।

नेहा पटेल
इंदौर, म. प्र.

पिछले दिनों मेरा अपनी चचेरी बहन के यहां शुजालपुर जाना हुआ। वहां आपकी यह ज्ञानवर्धक पुस्तिका पढ़ी। इससे मेरा काफी ज्ञान बढ़ा व मुझे लगा यही उपयुक्त पत्रिका है जो मेरी जिज्ञासाओं के उत्तर देने में सक्षम है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

कुणाल ढोमणे
सारणी, ज़िला बैतूल, म.प्र.

इस बार का मार्च-जून का संयुक्तांक पढ़ा। पढ़कर तबियत मस्त हो गई। ज़्यों द्रेज़ द्वारा प्रस्तुत 'हिरोशिमा से पोखरण तक' लेख पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आशा करता हूं कि संदर्भ भविष्य में ऐसे और लेख प्रस्तुत करेगी।

पीयूष वैष्णव
नरसिंहगढ़, ज़िला राजगढ़, म.प्र.

सयुक्ताक में छपे 'हिरोशिमा से पोखरण तक' ने दिल को दहला दिया। मेरे ख्याल से तो इस लेख को जन-जन तक पहुंचाना चाहिए। विशेषकर उन देशों में जहां परमाणु ऊर्जा का उपयोग जीवनोपयोगी कार्यों में न कर विश्व के सर्वनाश के लिए किया जा रहा है।

एक बात समझ नहीं आई कि इस लेख को भारतीय पोखरण परीक्षण के बाद ही प्रकाशित किया, क्या भारत ने जो परीक्षण किया है उसे गलत साबित करना चाह रहे हैं? भारत तो शांतिप्रिय देश है वह किसी का बुरा नहीं चाहता।

कविता शर्मा
हरदा, म. प्र.